मेघदूत (उत्तरमेघ)
पद्यकाव्य CC-VI
P.G II Sem

तिथि - 24/03/2020

विषय - अलकापुरी का वर्णन

प्र० - डॉ० मिताली मीनू, संस्कृत विभाग,
पूर्णिया कॉलेज, पूर्णिया।

Scanned with CamScanner

(2.) ... के आधार पर अलकापुरी का वर्णन करें।

(1) "मेघदूत" महाकवि कालिदास के काव्यसर्जन सुमेरु का अति-रमणीय उत्तुंग शृंग है। प्रबंध गीतिकाव्य के रूप में संस्कृत साहित्य-जगत् में प्रथम एवं अनुपम सृष्टि है और है इस कवि कुलगुरु की विशद कारयित्री प्रतिभा का निष्कलुष प्रतिफलन। इसमें स्वामी धनकुबेर के शाप से अभि अभिशप्त एवं नवोढा प्रियतमा से दूरीकृत निर्वासित जीवन जीने हेतु विवश विरहाग्नि में पल-पल झुलसते हुये यक्ष की मनोव्यथा का मार्मिक चित्रण अनेक वैचित्र्यों के साथ अलंकृत होकर शब्दचित्रांकित हुआ है।

इस महनीय काव्य के दो खण्डों में से पूर्व खंड में प्रमाद के कारण दण्डित यक्ष की स्थिति, मेघरूपी दूत के प्रति प्रिया तक अपना संदेश ले जाने के लिये उसकी अभ्यर्थना, प्रेयसी के निवासस्थान अलकापुरी तक जाने के लिये उसका मार्गवर्णन एवं अलकापुरी की पहचान का प्रारूप प्रस्तुत है तो उत्तरखंड में अलकापुरी का मनोज्ञ रमणीय अन्तः विवरण उसमें अवस्थित उसके भवन का चित्रवत् शब्दांकन, उसकी श्यामा नायिका की विरह विशीर्ण दशा का हृदय विदारक वर्णन तथा अन्त में उस प्रियतमा के जीवनधारण का अवलम्बन प्रणय संदेश यक्ष के शब्दों में उपस्थापित हुआ है।

यहाँ उत्तर मेघ में प्रथमतः वर्णित अलका-नगरी का बाह्य परिदृश्य, जो कि पूर्वमेघ के अंतिम श्लोक से प्रतिबिम्बित होता है, अधः प्रस्तुत है—

तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्रस्तगङ्गादुकूलां
न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन्।
या वः काले वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमाना
मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दम् ॥67॥

यहाँ यक्ष मेघ को निवेदन करता है कि परमसौम्य उस कैलाश शिखर के किञ्चित् नीचे प्रियतमों की गोद में प्रेयसियों की तरह विलासिता अलका, जिसका गंगारूपी श्वेताम्बर ग्रीमा से सुशोभायमान वस्त्र सरक गया है, को देखकर तुम अवश्य पहचान जाओगे। ऊँचे तथा देदीप्यमान प्रासादों से युक्त वह अलका वर्षाऋतु में कामिनियों की मुक्ताग्रथित वेणियों के समान जलबिन्दु बरसाने वाले मेघों को धारण करती है और उसके बाहरी उद्यान में विराजमान शिवजी के शिर की चंद्रिका से वहाँ के उत्तुंग

Scanned with CamScanner

2 प्रासाद सदा दीप्तिमान रहते हैं।

अलका के इस सौन्दर्य के साथ यहाँ महाकवि कालिदास की अनुपम उपमा की सुषमा किसे मोह नहीं लेती है।

तदनन्तर, उत्तरमेघ के अलकावर्णन का स्वरूप निम्नत: दर्शनीय है। यक्ष कहते हैं – (हे मेघ!) अलका पुरी की ललित वनिताएँ, चित्रांकित सौन्दर्य, संगीत में मृदंग की मादकता, रत्नजड़ित भूमि तथा आकाश को छूनेवाले प्रासाद आपकी समता करने में पूर्ण समर्थ है। इधर, पौरुष के प्रतीक, विद्युतवान, इन्द्रधनुषधारी, स्निग्ध एवं गंभीर गर्जन से गरिष्ठ, अन्त: में जल होने से आर्द्रचित्त उन्नत आपको उक्त गुणों से जीत सकने में अलका अवश्य ही समर्थ है। वहाँ षड्ऋतुएँ सदा विराजमान रहती हैं, सभी तरह के फूल सतत पुष्पित होते रहते हैं। यथा – लीला कमल (शरद); कमल, बालमुकुन्द (हेमन्त), लोध्र पुष्प (शिशिर), नवकुरबक (वसन्त), शिरीष (ग्रीष्म) तथा कदम्ब (वर्षा) आदि। वहाँ की नववधुएँ क्रमश: हाथों, अलक, मुखों, जूड़ों, कानों एवं सीमान्तों में इन्हें सजाकर नित्य नूतन बनी रहती हैं। उन्मत्त भ्रमरों की सुमधुर ध्वनि से वहाँ का परिवेश गुंजायमान रहता है। अलका में सदैव हंस की हँसी बनी रहती है। उसके घरेलू मयूरों की केका ध्वनि नित्य ध्वनित होती है। वहाँ प्रत्येक रात का अंधकार चाँदनी से चमत्कृत एवं पराजित होता रहता है। यक्षेश्वरों की वस्तीअलका में आँसुओं के दर्शनमात्र खुशी के अवसरों पर होते हैं। काम ज्वर – अन्य ताप को छोड़कर अन्यकारणों से कभी कोई वहाँ सन्तप्त नहीं होते "नान्यस्तापः कुसुमशरजादिष्टसंयोगसाध्यात्।" अलकावासियों में प्रणयकलह को छोड़कर कलह-कालिमा कहीं नहीं दीखती। वहाँ नवयौवनाओं के उद्दाम यौवन में वृद्धि के साथ युवाओं के कामनाओं की वृद्धि होती है, अवस्थागत वार्धक्य नहीं होता। रमणियों से संभोग करते समय नीवीबन्ध के ढीले पड़ने से कामी पुरुष उनके खिसकते वस्त्र को खींचते दीखेंगे। फलत: लज्जाधिक्य से उन रमणियों के अधरोष्ठ अत्यधिक लाल अंगारों की तरह प्रतीत होते हैं। उनके घरों में तैलदीपक के स्थान पर मणिदीप की प्रभा आँखों को प्रभावित

(3) करती है। वहाँ के सतमंजिले महलों की खिड़कियों से धूम सदृश मेघों के आवागमन के दर्शन होते हैं।

इन महलों की छतों में जटित चन्द्रकान्त मणियों से चन्द्रसम्पर्क के कारण जलस्राव हुआ करता है। इस जल संपर्क में जाकर कामकेलि से श्रान्त सुन्दरियाँ शरीर स्वेद का प्रशमन किया करती हैं। कामीजन नित्यरूप से नगरवधुओं से संलाप करते हुये उच्च एवं सुमधुर कण्ठ से भगवान कुबेर की कीर्ति का गान करते रहते हैं। अलका के बाहरी भाग में वैभ्राज नामक क्रीडोद्यान पल्लवित, पुष्पित रहता है। तत्रत्या वनिताएँ भृकुटियुक्त अपांगों के सफल प्रयोग में चतुर हैं। इस नगरी में एक कल्पवृक्ष भी है जो अबलाओं के सभी प्रकार के आभूषणों - रंगीवस्त्र, कटाक्षोत्पादक मद्य, पल्लव पुष्प, अलंकार, महावर आदि प्रदान किया करता है।

इसी अलका में भगवान कुबेर के निवासस्थान में उत्तर इन्द्रधनुष तुल्य बाह्यभागस्थ द्वारवाला मेघदूत नायक यक्ष का निवास है।